10

प्रारंभिक वर्षों में बच्चों की देखभाल

यह सर्वमान्य तथ्य है कि गर्भाधान के समय से बच्चों का विकास प्रारंभ होता है। यह भी माना जाता है कि बच्चों के सीखने की प्रक्रिया उनके जन्म से पूर्व ही प्रारंभ हो जाती है। वर्तमान में हुए अनेक अनुसंधानों से यह निष्कर्ष निकलता है कि बच्चों के विकास और सीखने के लिए एक पारस्परिक वातावरण, प्रेरणा, उत्साह और देखभाल की आवश्यकता होती है। बच्चों का विकास प्रारंभिक देखभाल और अनुभवों से प्रभावित होता है और उनके चिंतन की प्रकृति पारस्परिक क्रियाओं द्वारा निर्देशित होती है। इस पाठ में आप प्रारंभिक वर्षों में बच्चों की देखभाल के विषय में पढ़ेंगे।

अधिगम प्रतिफल

इस पाठ के अध्ययन के बाद आप–

- देखभाल के सिद्धांतों की व्याख्या करते हैं;
- प्रथम तीन वर्षों में स्वास्थ्य, स्वच्छता और आहार के महत्व की चर्चा करते हैं;
- जिज्ञासा, अभिप्रेरणा एवं अधिगम हेतु संवेदनात्मक उद्दीपन के महत्व की व्याख्या करते हैं;
- विभिन्न प्रकार की देखभाल प्रणालियों को पहचानते हैं;
- देखभाल हेतु निरंतरता और अनुरूपता की आवश्यकता का वर्णन करते हैं; और
- बाल देखभाल हेतु शिक्षक और अभिभावक के संबंध के महत्व की व्याख्या करते हैं।

10.1 तीन वर्ष से कम आयु के बच्चों की देखभाल के सिद्धांत

प्रारंभिक तीन वर्ष प्राय: आधार वर्ष कहलाते हैं क्योंकि इस काल के दौरान विकास के सभी

टिप्पणी

आयामों में अतुलनीय वृद्धि होती है। बाल्यकाल के महत्वपूर्ण प्रारंभिक अनुभव माता-पिता की देखभाल, पोषण और घर के वातावरण से प्राप्त होते हैं। बालक उन देखभालकर्ताओं के साथ संबंध बनाने में सहज महसूस करते हैं जो उनको बोलना, खाना, खेलना आदि सिखाते हैं और उनको प्यार तथा उनकी परवाह करते हैं। गुणवत्तापरक बाल्य देखभाल इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि बालकों के अधिगम और स्वस्थ संबंधों पर इसका सीधा प्रभाव पड़ता है। आइए, अब हम देखभाल के प्रमुख सिद्धांतों को समझते हैं।

सिद्धांत 1: सहयोगात्मक एवं प्रतिक्रियात्मक वातावरण

सहयोगात्मक वातावरण और प्रतिक्रियात्मक देखभाल, ऐसे बच्चों को जो अपनी सभी संवेदी प्रतिक्रियाओं हेतु देखभालकर्ताओं पर पूर्ण रूप से निर्भर होते हैं, उनको एक सुरक्षित आधार और दिनचर्या प्रदान करता है। खाना, शारीरिक आवश्यकता तथा प्यार से छूने के प्रति बालकों की अनुकूल प्रतिक्रिया, बच्चों की प्राथमिक आवश्यकता है। शारीरिक देखभाल के अतिरिक्त एक सुरक्षित संबंध उन्हें व्यवहार एवं संवेग नियमित करने में मदद करता है।

सिद्धांत 2: प्रतिक्रियात्मक संबंध और सुदृढ़ जीवन कौशल

देखभालकर्ता प्यार और अन्तर्क्रिया द्वारा बालकों के स्वस्थ मस्तिष्क विकास को प्रोत्साहित करते हैं और उन्हें चिंता तथा अनिश्चितता से बचाते हैं। बच्चों के रोने अथवा उनसे बोलते समय देखभाल प्रणाली में सदैव बच्चों के साथ आँखों का सम्पर्क और सुखद हाव-भाव अथवा आलिंगन अवश्य सम्मिलित होने चाहिए। यह मस्तिष्क की तंत्रिकाओं के विकास में सहायक होता है, जिससे बालक संज्ञानात्मक योग्यताओं और सामाजिक-संवेगात्मक कौशलों को अर्जित करता है। बच्चों में धीरे-धीरे विभिन्न कार्यों और गतिविधियों को करने में आत्मनिर्भरता विकसित हो जाती है। इस प्रक्रिया में देखभालकर्ताओं को ऐसी सुनियोजित दैनिक गतिविधियों का आयोजन करना चाहिए जो रचनात्मक खेल और आदर्श सामाजिक व्यवहार को प्रोत्साहित करे ताकि बच्चा अपने नये कौशलों का अभ्यास कर सके। यह बालकों में तनाव का सामना करने, जिज्ञासा उत्पन्न करने और सृजनात्मक कार्य के साथ-साथ सामाजिक संबंध बनाने की इच्छाशक्ति विकसित करने में सहायक होता है।

सिद्धांत 3: तनाव के स्रोतों को कम करना

'तनाव कम करना', बच्चों द्वारा आवश्यकतानुसार विभिन्न संवेदी अन्तक्रियाओं जैसे श्रव्य, दृश्य, स्पर्श करने की समझ, चूसने संबंधी अनुभव, तथा गतिसंवेदी अनुभवों पर प्रतिक्रिया देने को इंगित करता है। बालकों को अकेला छोड़ देने अथवा उनकी अनदेखी करने से उनकी वृद्धि और विकास में अवरोध उत्पन्न हो सकता है। अत: बच्चों को किसी भी प्रकार के तनाव से दूर रखने के लिए देखभालकर्ताओं के लिए यह आवश्यक है कि वे उनको ऊँची आवाजों, आपत्तिजनक दृश्यों और घातक तीव्र गतिविधियों से दूर रखें।

पाठगत प्रश्न 10.1

बताइए कि निम्नलिखित वाक्य सत्य हैं अथवा असत्य–

1. बच्चे अपने बाह्य वातावरण से प्रभावित नहीं होते हैं। ( )
2. बच्चा जन्म के समय से ही वस्तुओं को देखने, सुनने एवं स्पर्श करने के द्वारा सीखता है। ( )
3. चिंता और तनाव आगे चलकर बच्चे के अधिगम को प्रभावित करते हैं। ( )
4. संवेगात्मक स्वास्थ्य के लिए बच्चों के प्राथमिक संबंध महत्वपूर्ण हैं। ( )
5. शारीरिक देखभाल बालकों की प्राथमिक आवश्यकता है क्योंकि यह विकास के अन्य पक्षों को भी प्रभावित करता है। ( )

10.2 शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति का महत्व

देखभाल के सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए, देखभाल प्रणालियों को विकास के विविध आयामों के संदर्भ में भी समझना आवश्यक है। प्रथम एवं महत्वपूर्ण रूप से, बालक को खाना खिलाना, शारीरिक दक्षता और संवेगात्मक सुरक्षा एवं उद्दीपन पर बल दिया जाना आवश्यक है। प्रस्तुत खंड में आप वृद्धि, उत्तरजीविता एवं बाल विकास का अध्ययन करेंगे।

10.2.1 पौष्टिक आहार

माता का दूध बच्चों के लिए सर्वोत्तम होता है। विश्व की सभी संस्कृतियों में दशकों से स्तनपान को लाभकारी बताया गया है। यह अपने आप में एक पूर्ण आहार है और छह माह की आयु तक बच्चों को किसी प्रकार के पूरक पोषण आहार की आवश्यकता नहीं होती है। यह बच्चों को संक्रमण से बचाता है और उनकी रोग प्रतिरोधी क्षमता का विकास करता है। इससे शिशु रुग्णता और शिशु मृत्युदर में भी कमी आती है। इसके साथ ही स्तनपान से बच्चों में स्पर्श और अपनी माता के साथ सहजता की भावना भी विकसित होती है। छह माह के पश्चात् स्तनपान छुड़ाने की प्रक्रिया आरंभ की जा सकती है क्योंकि इस आयु में बच्चे नरम ठोस खाद्य पदार्थ ग्रहण करने लगते हैं। स्तनपान छुड़ाने के लिए ग्रहण किये जाने वाले नरम ठोस खाद्य पदार्थ वह खाद्य पदार्थ हैं जो बच्चे को स्तनपान से नियमित भोजन की ओर ले जाते हैं। अनेक संस्कृतियों में इस परिवर्तन के लिए अनेक समारोह भी आयोजित किये जाते हैं। अनेक संस्कृतियों में अलग-अलग भोजन और स्तन्य त्याग भोजन उपलब्ध है जैसे– दलिया, सूजी खीर, खिचड़ी, रागी आदि।

स्तनपान कराने वाली माताओं की देखभाल भी अति आवश्यक है क्योंकि शिशु अपने पोषण के लिए स्तनपान पर ही निर्भर होता है। स्तनपान के दौरान उन्हें पौष्टिक आहार खाना चाहिए ताकि बच्चे को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध हो सके। इस आहार में दाल, अनाज, फल, सब्जी, मूंगफली, सूखे मेवे और दूध से बने खाद्य पदार्थ सम्मिलित होने चाहिए। मांसाहारी माताओं को

टिप्पणी

मांस, मछली और अंडों का सेवन करना चाहिए। ऐसी माताओ को पर्याप्त मात्रा में तरल पदार्थों जैसे स्वच्छ पेयजल, दूध और फलों का रस आदि का सेवन करना चाहिए ताकि उनके शरीर में पानी की कमी न हो सके।

10.2.2 सुरक्षा, पर्याप्त नींद एवं व्यायाम

देखभाल और अन्तर्क्रिया की संवेदनाओं के माध्यम से बच्चों का बाहरी दुनिया से संबंध स्थापित होता है। उनके साथ प्रेमपूर्ण व्यवहार और देखभाल का अति महत्व है क्योंकि यह उनको शारीरिक और भावात्मक सुरक्षा प्रदान करता है। देखभालकर्ताओं का यह कर्तव्य है कि वे बच्चों के लिए आरामदायक कपड़े, पर्याप्त नींद और व्यायाम का ध्यान रखें। आइए, इसके बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं–

वस्त्र : नवजात शिशु के वस्त्र ढीलेढाले और नरम होने चाहिए। कुछ परिवारों में नवजात शिशु के वस्त्र, बुजुर्ग व्यक्ति के पुराने वस्त्रों से बनाने की परंपरा है। इसका उद्देश्य शिशुओं को वस्त्रों की चुभन से बचाना है, क्योंकि उनकी त्वचा बहुत कोमल एवं नाजुक होती है। उनकी स्वच्छता का भी ध्यान रखा जाना चाहिए और उन्हें अधिक समय तक गीला नहीं रखा जाना चाहिए।

नींद : हम सभी जानते हैं कि शिशु लगभग 18 घंटे सोते हैं। धीरे-धीरे यह अवधि कम होती जाती है। वृद्धि के लिए नींद शिशुओं में वैसे ही आवश्यक है जैसेकि मस्तिष्क के नाड़ी तंत्र से संबंध बनाने के लिए संवेदन उद्दीपन आवश्यक है। शिशुओं की नींद आयु के अनुसार भिन्न-भिन्न होती है। जैसे-जैसे शिशु बड़ा होता है उसकी नींद का कुल समय धीरे-धीरे कम होता जाता है, परंतु रात्रिकालीन नींद की अवधि बढ़ती जाती है।

व्यायाम : प्रथम चार हफ्तों के दौरान शिशु केवल अपने अंगों को हिला सकते हैं। इससे उन्हें जगह एवं स्थान का ज्ञान होता है। धीरे-धीरे वह पलटना, पेट के बल लेटना, रेंगना और खड़े होना सीख जाते हैं। शिशुओं के साथ खेलना और बच्चों के खेल अच्छे व्यायाम हैं।

10.2.3 प्रतिरक्षण एवं प्रोत्साहक स्वास्थ्य देखभाल

प्रतिरक्षण वह प्रक्रिया है, जिसमें विशेष प्रकार के टीकाकरण द्वारा व्यक्ति की संक्रामक बीमारी से प्रतिरक्षा अथवा प्रतिरोधी क्षमता को विकसित किया जाता है। ये टीके शरीर की प्रतिरोधी क्षमता को बढ़ाकर व्यक्ति की संक्रामक बीमारियों से रक्षा करते हैं। टीकाकरण अथवा प्रतिरक्षण प्रणाली बच्चों को प्राय: लाइलाज बीमारियों से बचाती है। जन्म के तुरंत बाद बच्चे का टीकाकरण कार्ड बना दिया जाता है जिसमें सभी टीकों का ब्यौरा होता है। निम्नलिखित सारणी में आयु के अनुसार लगाये जाने वाले टीकों को प्रदर्शित किया गया है–

आयु	टीकाकरण
जन्म	बी.सी.जी., ओ.पी.वी, हिपेटाइटस वी, एच.पी.वी.
छह हफ्ते	डी.पी.टी., ओ.पी.वी., एच.आई.बी. न्योमोकोकल हिपेटाइटस बी

टिप्पणी

आयु	टीकाकरण
दस हफ्ते	डी.पी.टी., ओ.पी.वी., हिपेटाइटस बी, एच.आई.बी., न्यूमोकोकल, आई.पी.वी.
चौदह हफ्ते	ओ.पी.वी., डी.पी.टी., हिपेटाइटस बी, एच.आई.बी., न्यूमोकोकल, आई. पी.वी.
छह माह	रोटा वायरस, इन्फ्लूऐंजा, एच.पी.वी.
नौ माह	खसरा (Measles)
बारह माह	छोटी चेचक (Varicella)
पंद्रह माह	एम.एम.आर., न्यूमोकोकल, बूस्टर, आई.पी.वी.
अठारह माह	ओ.पी.वी., डी.पी.टी., एच.आई.बी. बूस्टर, हिपेटाइटस ए
2 वर्ष	टायफॉइड, हिपेटाइटस ए
4 वर्ष	एम. एम. आर.
5 वर्ष	ओ.पी.वी., डी.पी.टी. बूस्टर

स्रोत- शिशुओं एवं बच्चों हेतु राष्ट्रीय टीकाकरण अनुसूची

10.2.4 सफाई एवं स्वच्छता

सफाई और स्वच्छता बच्चों को संक्रमण से बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। स्वच्छता संबंधी अच्छी आदतों वाली दिनचर्या का पालन तथा वातावरण को साफ रखना, बच्चों के समग्र स्वास्थ्य एवं भलाई को बढ़ावा देता है। कुछ दैनिक आदतें जैसे बच्चों की आँखों को गीले कपड़े से पोंछना और पलकों एवं आँखों के कोनों को गीलाकर साफ करना आदि आवश्यक हैं। इसी प्रकार नाक, नाखून और पैरों के अंगूठों को भी साफ किया जाना चाहिए।

10.3 विकास के लिए संवेदी उद्दीपन

शिशु अपने आसपास की दुनिया को जानने के लिए अपनी इंद्रियों का प्रयोग करते हैं। विभिन्न इद्रियां एक साथ कार्य करती हैं ताकि शिशु एवं बच्चे वातावरण के बारे में जान सकें, खोजबीन कर सकें और विशेष व्यवहार सीख सकें। शोध द्वारा यह प्रमाणित हो चुका है कि उद्दीपन से तंत्रिका तंत्र के विकास द्वारा मस्तिष्क के विकास में सहायता मिलती है जोकि बाद में अधिगम में सहायक होता है। संवेदी उद्दीपन गतिक कौशलों के विकास और पांचों इंद्रियों - दृश्य, श्रृव्य, सूंघना, स्वाद और स्पर्श के प्रयोग द्वारा सामान्य समस्याओं के समाधान की योग्यता को विकसित करने में सहायक होता है। प्रारंभिक वर्षों में बच्चे के लिए देखने, सुनने, सूंघने, स्वाद

लेने और स्पर्श करने की अनेक गतिविधियाँ होनी चाहिए और उनको बार-बार दोहराया जाना चाहिए। आइए, हम संवेदी उद्दीपन के विषय में विस्तृत अध्ययन करते हैं।

10.3.1 देखने की संवेदना

देखना और सुनना, मस्तिष्क में तंत्रिका तंत्र को सक्रिय करने वाले प्रथम संवेदी अनुभव होते हैं। शोध द्वारा यह तथ्य सामने आए हैं कि जब बच्चा विभिन्न रंगों, आकृत्तियों और चेहरों को देखता है तो उसकी दृश्य क्षमता का विकास होता है। अन्तर्क्रिया अथवा कुछ दृश्य खेलों और गतिविधियों जैसे कि अपना चेहरा बच्चे के समीप ले जाना, चेहरे से अनेक हाव-भाव बनाना, आँखों का संपर्क, लुका-छुपी आदि के द्वारा देखभालकर्ता बच्चों की दृश्य क्षमता को विकसित करने में सहायक हो सकते हैं। इसके साथ ही, विभिन्न आकृतियों तथा रंगों की वस्तुएं और खिलौने, बच्चों की साधारण प्रक्रिया द्वारा निरीक्षण एवं विश्लेषण के आधार पर अन्तर को पहचाने में सहायता करते हैं।

10.3.2 श्रवण

जन्म से ही बच्चे अपने चारों ओर विभिन्न प्रकार की ध्वनियों और आवाजों को सुनते हैं जिससे वे भाषा का आधारभूत ज्ञान प्राप्त करते हैं। देखभालकर्ता बच्चों की आवाजें निकालते हैं और उनसे बच्चों जैसी आवाज में बात करते हैं। इस प्रकार बदले हुए नम्र स्वर उत्साहवर्धक और आनंददायक होते हैं। धीरे-धीरे यह स्वर बालकों का सामाजीकरण कर उन्हें नियमित बातचीत के लिए तैयार करता है। इसके अतिरिक्त बालक दैनिक वार्तालाप, निर्देशों और ध्वनियों द्वारा भी भाषीय ज्ञान प्राप्त करते हैं। श्रवणीय प्रोत्साहन अनेक प्रकार से दिया जा सकता है जैसे कि-

- बच्चों का भाषायी आधार मजबूत बनाने हेतु उनसे बातचीत करना;
- संगीत की धुन और थाप के साथ बालकों की क्रिया करवाना; तथा
- बालकों को प्राकृतिक आवाजों जैसे कि पक्षियों और जानवरों की आवाजों से परिचित करवाना। इससे उनकी श्रवणेन्द्री विकसित होती है और वे प्रकृति के साथ अपना संबंध स्थापित कर पाते हैं।

10.3.3 स्पर्श

जब बच्चों को आराम से उठाया जाता है और उनके साथ खेला जाता है तो बच्चों में महत्व और विश्वास की संवेदनाएं विकसित होती हैं। यदि बच्चों की प्यार से देखभाल नहीं की जाती है तो उनमें अस्वीकृति का भाव उत्पन्न हो जाता है और यह तनाव का कारण हो सकता है। बच्चों को गोद में लेना, अपने चेहरे के समीप लाना और प्यार से बात करना आदि बच्चों की संवेदनाओं को उत्तेजित करता है जिससे उनमें अपने सामाजिक परिवेश से संबंध एवं विश्वास उत्पन्न होता है। अब आप आसानी से समझ सकते हैं कि बच्चों को नरम खिलौने (Soft toys) क्यों पसंद आते हैं। खिलौनों का नरम मुलायम कपडा उन्हें आराम और उत्साह प्रदान करता है।

बच्चे स्पर्श संवेदी खेलों के दौरान वस्तुओं की पहचान स्पर्श के माध्यम से करते हैं, जोकि उनके गतिक कौशलों जैसे कि - दबाना, खींचना, धकेलना और फेंकना आदि के विकास में सहायक होता है। बच्चों की आयु के अनुसार स्पर्श संबंधी गतिविधियाँ भिन्न-भिन्न होती हैं। बच्चें प्राय: उन्हीं चीजों की तरफ आकर्षित होते हैं जिन्हें वह स्पर्श कर सकते हैं। उन्हें भोजन, खिलौने, कपड़े, मुलायम वस्तुओं आदि के स्पर्श के माध्यम से नई चीजों से परिचित कराया जाना चाहिए। इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि बच्चे धुंए, घातक रसायन और प्रदूषक तत्वों, जोकि शारीरिक संपर्क के माध्यम से उनमें प्रवेश कर सकते हैं, से दूर रहें।

10.3.4 गतिसंवेदी

गतिसंवेदी का अर्थ है, गति का भाव, अर्थात् गति द्वारा भौतिक स्थान की खोजबीन करना। इसका अर्थ संलग्नता और क्रिया द्वारा अधिगम है। शारीरिक गतिविधि, बच्चों को अपने आसपास के भौतिक वातावरण को समझने में सहायक होती है। देखभालकर्ता जब बच्चों को उठाता है और विभिन्न प्रकार की शारीरिक गतिविधि करवाता है तो बच्चे विस्मित, सुरक्षित और आनंद का अनुभव करते हैं। जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते हैं, हम देखते हैं कि कुछ बच्चे एक स्थान पर बैठकर ही गतिविधियाँ करना पसंद करते हैं जबकि कुछ बच्चे बाहर जाना चाहते हैं। इसी प्रकार कुछ बच्चे विभिन्न शारीरिक गतिविधियों जैसे तालियाँ बजाना, अपनी उंगलियों को चटकाना, चिकनी मिट्टी से आकृतियां बनाना आदि के माध्यम से अधिगम करते हैं। गतिक क्रियाओं के अवसर बच्चों की खोजबीन और अंवेषण की इच्छा पूरी करते हैं। बच्चे की देखभाल के दौरान कुछ गतिक क्रियाएं निम्नलिखित हो सकती हैं–

- बच्चों को घर में उपलब्ध विभिन्न वस्तुओं के ऊपर, नीचे और एक वस्तु से दूसरी वस्तु तक रेंगकर जाने के लिए प्रोत्साहित करना।
- उनमें गति और संतुलन की संवेदनाओं को विकसित करने हेतु बच्चे को ऊपर उठाना, नीचे लाना और विभिन्न स्थितियों में खेलना।
- बच्चे को पकड़ना, सहलाना, एक धुन पर एक प्रकार से क्रिया करना अथवा करवाना।
- बच्चों से बात करते समय ताली बजाना तथा हाव-भाव बनाना।

पाठगत प्रश्न 10.2

अ) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. छह मास की आयु तक बच्चों को पौष्टिक आहार .... से मिलता है।
2. अच्छी वार्तालाप से बालकों के अंदर .... भाव विकसित होता है।
3. बच्चों को वृद्धि के लिए नींद की आवश्यकता होती है, क्योंकि वे .... की स्थिति में होते हैं।
4. बच्चों के लिए स्तन्य त्याग भोजन .... द्वारा तैयार किया जाता है। यह भोजन उन्हें माता के .... से परिवर्तित कराने हेतु दिया जाता है।

टिप्पणी

ब) सही मिलान कीजिए–

i)	टेटनस	अ)	स्वच्छता
ii)	स्पर्श	ब)	देखने की संवेदना
iii)	चेहरे के भाव	स)	भाषा एवं गति
iv)	आंखों की सफाई	द)	आरामदायक एवं संतुष्टि
v)	शिशु के खेल	च)	टीकाकरण

गतिविधि 10.1

बाल्य देखभाल केन्द्रों के दो चित्र काटकर चिपकाइए। ये चित्र आपको अखबार, पत्रिका, इंटरनेट अथवा आस-पड़ोस से उपलब्ध हो जायेंगे। प्रारंभिक वर्षों में बच्चों की देखभाल के संदर्भ में इन चित्रों में दर्शायी गयी गतिविधियों और प्रयुक्त सामग्री पर टिप्पणी कीजिए।

10.4 प्रारंभिक वर्ष आगामी अधिगम का आधार : गुणवत्तापरक देखभाल के तरीके

बच्चे शुरूआत से ही गुणवत्तापरक देखभाल और शिक्षा के अधिकारी होते हैं। देखभाल की गुणवत्ता का सीधा प्रभाव बच्चों की अधिगम और स्वस्थ संबंध बनाने की योग्यता एवं उनके इष्टतम विकास पर पड़ता है। जैसा कि पहले भी बताया जा चुका है कि प्रारंभिक बाल्यावस्था तीव्र विकास की अवधि होती है। यह जीवनपर्यन्त चलने वाले अधिगम का आधार होती है। नि:संदेह, यदि कोई बच्चा प्रारंभिक वर्षों में आलसी होता है तो उसकी मानवीय क्षमताओं का ह्रास होता है और इसका भविष्य में बच्चे के व्यस्क जीवन पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। उच्च कोटि का ईसीसीई कार्यक्रम छोटे बच्चों के शारीरिक, सामाजिक, संवेगात्मक और बौद्धिक विकास हेतु सुरक्षित और पोषक वातावरण प्रदान करता है।

हम मजबूत भविष्य की नींव रख रहे हैं। शिशुओं और बालकों को देखभाल हेतु एक विशेष वातावरण की आवश्यकता होती हैं जिसमें वे ऐसे देखभालकर्ताओं के साथ पलते हैं जो यह जानते हैं कि उनकी स्वस्थ वृद्धि और विकास को किस प्रकार प्रोत्साहित करना है। छोटे बच्चों की दिनचर्या उनकी आवश्यकताओं, जिसमें उपयुक्त उद्दीपन एवं आराम का समय भी सम्मिलित है, के अनुरूप होनी चाहिए। बच्चों के लिए एक सुरक्षित, पोषक और उद्दीपक वातावरण हेतु निम्नलिखित दशाएं होनी चाहिए–

- बालक एवं देखभालकर्ता का कम अनुपात
- समूह का छोटा आकार
- अभिप्रेरित एवं संवेदनशील देखभालकर्ता

- देखभालकर्ता और बच्चों में सकारात्मक अन्तर्क्रिया।
- आयु के अनुसार उचित क्रियाशील गतिविधियाँ एवं उद्दीपन सामग्री जैसे कि ब्लॉक, खिलौने, रंग, मोती आदि।
- स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं सुरक्षा की आदतें।
- नियमित व्यावसायिक विकास के अवसरों सहित प्रशिक्षित कर्मचारी।

निम्नलिखित खंड में बच्चों के विकास में देखभाल के महत्व पर प्रकाश डाला गया है।

10.4.1 रूचि, जिज्ञासा और अभिप्रेरणा

शुरूआती वर्ष वह समय है, जब हम बच्चों के भविष्य की कल्पना करते हैं। प्रायः हम बच्चों की रुचियों पर ध्यान नहीं देते। रुचि, ऊर्जा का वह रूप है जिससे बच्चों में जिज्ञासा के साथ-साथ कार्य करने की अभिप्रेरणा और दिशा-निर्देशन मिलता है। शिशुओं में एक अदभुत उत्साह होता है क्योंकि दुनिया की सभी चीजें उनके लिए नई होती हैं और यह नयापन उन्हें खोजबीन करने के लिए प्रेरित करता है। यही वह ऊर्जा होती है जो उनमें रुचि और जिज्ञासा को उत्पन्न करती है। रुचि की निरंतरता केवल बाल्यावस्था में संवेगात्मक स्वास्थ्य के लिए ही नहीं अपितु जीवनपर्यन्त महत्वपूर्ण हैं। रुचि के बिना न तो जिज्ञासा हो सकती है, न ही खोजबीन और न ही वास्तविक अधिगम।

शिशु अपनी माता अथवा देखभालकर्ता के चेहरे, विशेषतया उनकी आँखों के प्रति सर्वाधिक रुचि दर्शाते हैं। जल्दी ही वे उन वस्तुओं में रूचिकर हो जाते हैं जो रंगीन, गतिमान, तालबद्ध अथवा लयबद्ध (अथवा सामान्य रूप से सुंदर) होती है। छोटे बच्चे अपनी जिज्ञासा और रुचि के कारण ही चौंका देने वाली गतिविधियाँ और वार्तालाप भी करते हैं। यदि देखभालकर्ता चीजों और घटना के प्रति जिज्ञासा प्रदर्शित करते हैं और उनकी व्याख्या भी प्रस्तुत करते हैं तो बच्चे जिज्ञासु और अभिप्रेरित होंगे। बच्चों में जीवनपर्यन्त रुचियों की निरंतरता को बनाये रखने में कार्य करने, पर्यवेक्षण करने और खोजबीन करने की इच्छा एवं ऊर्जा का महत्वपूर्ण स्थान है। व्यस्कों द्वारा बच्चों की रुचियों का प्रसन्नतापूर्वक उत्तर देना, बच्चों को व्यस्त, जिज्ञासु और अभिप्रेरित रखने का सर्वोत्तम उपाय है।

10.4.2 संबंध बनाना

शिशु और छोटे बच्चों को जीवन के प्रारंभिक वर्षों में सजग और सक्रिय रखने के लिए माता-पिता एवं परिवार के अन्य सदस्यों के साथ उनके सुखद एवं सहयोगात्मक संबंध होने आवश्यक है। बच्चों में आत्मनिर्भरता, आत्मसम्मान और स्वास्थ्य के विकास के लिए सकारात्मक संबंध आवश्यक है। व्यस्कों के साथ विश्वसनीय संबंध होने पर बच्चे आत्मविश्वासी और सुरक्षित अनुभव करेंगे और उनमें स्वयं निर्णय लेने की क्षमता का विकास होगा। देखभालकर्ताओं के साथ अन्तर्क्रिया के द्वारा बच्चे हिस्सेदारी, सहयोग और एक दूसरे का सम्मान करना जैसे सामाजिक कौशलों को सीखते हैं। वे संप्रेषण और गतिक कौशल भी सीखते हैं। संज्ञानात्मक उद्दीपन जो कि शुरूआती मस्तिष्क विकास को प्रभावित करता है, प्रारंभिक अनुरक्ति एवं सकरात्मक संबंधों पर आधारित होता है। प्रारंभिक वर्षों में बनाये गये ये संबंध,

टिप्पणी

जीवनपर्यन्त रुचि, जिज्ञासा एवं अभिप्रेरणा को बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बच्चों के सामाजिक कौशल, संवेगात्मक स्तर और मूल्य आगे चलकर उनकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करते हैं।

10.4.3 खेल एवं आनंदमयी अन्तर्क्रिया

जन्म से ही बच्चों को नयी-नयी चीजों की जानकारी करना और खोजबीन करना आनंददायक लगता है। शुरूआत में वे अपने शरीर का प्रयोग जैसे कि अपने हाथों एवं पैरों को पटकना, अपनी मांग प्रदर्शित करने के लिए करते हैं। जैसे-जैसे वे बड़े होते जाते हैं वे नयी रचनाओं, सामग्रियों और संसाधनों की खोजबीन के माध्यम से अपने आस-पास की दुनिया को समझने लगते हैं। संवेगात्मक खेल, बच्चों में खोज और स्वतंत्र चिंतन के साथ-साथ कल्पना और सृजनात्मकता को भी बढ़ाते हैं। अनुसंधान द्वारा यह प्रमाणित किया जा चुका है कि संवेदी खेल बच्चों के विकास और अधिगम में लाभदायक होते हैं।

- संवेदी खेलों द्वारा मस्तिष्क का विकास होता है, जिसका प्रभाव अधिगम, स्मृति एवं जटिल कार्यों को पूर्ण करने की योग्यता पर पड़ता है।
- खेलों द्वारा भाषा का विकास भी होता है और बच्चे दुनिया के विषय में बात करने के नये तरीके सीखते हैं। नये अनुभव, वस्तुएं, गीतों और कविताओं को सुनना आदि भाषायी विकास को प्रोत्साहित करते हैं और बच्चे खेल-खेल में प्रभावशाली ढंग से वार्तालाप करना सीखते हैं।
- स्पर्शनीय संवेदी खेलों के दौरान बच्चे वस्तुओं को स्पर्श द्वारा पहचानते हैं जिससे उनके विशेष गतिक कौशलों जैसे दबाना, खींचना, धकेलना एवं फेंकना आदि कौशलों का विकास होता है।
- संवेदी खेलों से बच्चों की विचार प्रक्रिया, समझ एवं तार्किक बुद्धि सुदृढ़ होती है, जोकि उनके संज्ञानात्मक विकास में सहायक होती है। नवीन सामग्री के प्रयोग द्वारा बच्चे नयी संकल्पनाओं को समझते हैं।
- सामूहिक गतिविधियों द्वारा सामाजिक वार्तालाप को प्रोत्साहन मिलता है। सकारात्मक संवेदी खेलों का वातावरण बच्चों को दूसरों के साथ प्रभावशाली ढंग से अन्तर्क्रिया करने एवं कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करता है जो कि उनके विकास के लिए अति आवश्यक है। वे नये संबंध बनाना और अपने विचारों को साझा करना शुरू आरंभ करते हैं मिट्टी अथवा पानी के खेल अथवा चित्रकारी, सामाजिक अन्तर्क्रिया को प्रोत्साहित करने वाले लोकप्रिय खेल हैं क्योंकि इनमें बच्चे एक साथ बैठकर सामग्री का उपयोग करते हैं।
- सक्रिय संवेदी खेलों से बच्चे अपने तथा अपने शरीर के प्रति अधिक जागरूक हो जाते हैं जिससे उनमें अपने आस-पास के वातावरण की बेहतर समझ विकसित होती है।

10.4.4 लयबद्धता एवं देखभाल

नियमित दिनचर्या का अपना महत्व होता है, क्योंकि इससे बच्चों में सुरक्षा एवं अपने वातावरण

पर नियंत्रण की भावना आती है। नियमित दिनचर्या बच्चों को आने वाले परिवर्तनों के लिए संवेगात्मक रूप से तैयार करती है। ये बच्चों की अनअपेक्षित परिवर्तनों से सुरक्षा करते हैं क्योंकि परिचित कार्यक्रम, दिनचर्या अथवा वस्तुएं, परिवर्तन के समय बच्चों मे नियमितता, स्थायित्व एवं शांति का भाव लाते हैं। शिशु सुबह अथवा शाम नहीं समझते हैं, किंतु देखभाल गतिविधियों से वे समय, क्रमबद्धता और शाश्वतता को समझ पाते हैं। परिवार में बुजुर्गों को प्राय: विस्मित करने वाले अविश्वसनीय कथन कहते हुए सुना जाता है जैसे कि– ''यह बच्चा शाम को रोता है, यदि इसके पिता को काम से लौटने में देरी हो जाती है।'' अथवा माता से कहा जाता है 4 बजे तक आ जाना, नहीं तो तुम्हारा बच्चा बेचैन हो जाता है। केवल निरीक्षण के आधार पर किये गये इस प्रकार के कथन मुश्किल से चार या छह माह के बच्चे की वास्तविक समय के आकलन की क्षमता के विषय में आपको आश्चर्यचकित कर देते हैं। यदि बच्चों की दिनचर्या में अधिक परिवर्तन होता है तो वे अपनी जैविक घड़ी एवं लयबद्धता के कारण परेशानी अनुभव करते हैं। परिचित वस्तुएं और देखभाल दिनचर्या का सावधानीपूर्वक पालन बच्चों में संवेगात्मक स्थिरता एवं संतुलन विकसित करने में सहायक होता है। जन्म के समय से ही बच्चे दुनिया को जानना चाहते हैं और प्रतिदिन, नियमित एवं चरणबद्ध देखभाल से उन्हें अपेक्षाएँ और संतुष्टि प्राप्त होती है। छोटे बच्चों के लिए हर दिन अधिगम एवं उत्साह से भरा होता है, और उनकी दिनचर्या उनके कौतूहल को शांत करती है।

पाठगत प्रश्न 10.3

रिक्त स्थान भरिए–

1. संज्ञानात्मक उद्दीपक प्रारंभिक .... एवं .... संबंधों पर निर्भर होता है।
2. नियमित दिनचर्या बच्चों में .... का भाव एवं अपने .... के ऊपर नियंत्रण प्रदान करती है।
3. संवेदी खेल .... एवं .... को प्रोत्साहित करते हैं।
4. खोजबीन और अधिगम हेतु रूचि एवं .... महत्वपूर्ण है।
5. बच्चों को एक ऐसे कार्यक्रम की आवश्यकता होती है जो उनकी जरूरतों के अनुरूप हों जिसमें उपयुक्त .... और .... का समय भी सम्मिलित है।

10.5 देखभाल हेतु वातावरण के प्रकार: पारिवारिक एवं गैर-पारिवारिक

नवजात शिशुओं एवं बच्चों की देखभाल अधिकांशतया घर पर ही होती है। किंतु अनेक कारणों जैसे कि– कामकाजी माता-पिता, एकल अभिभावक अथवा संस्थानों में बच्चे आदि कुछ कारकों के कारण बच्चों के पालन-पोषण हेतु पारिवारिक देखभाल के अतिरिक्त गैर-पारिवारिक व्यस्कों द्वारा देखभाल की आवश्यकता उत्पन्न होती है। इन व्यस्कों को बच्चे की देखभाल हेतु,

टिप्पणी

विशेष रूप से प्रत्येक बच्चे तक पहुँच बनाने के महत्व को समझने हेतु, प्रशिक्षित होना आवश्यक है। बच्चों की देखभाल को दो भागों, 'केंद्र-आधारित देखभाल' और 'घर आधारित देखभाल' में बांटा जा सकता है। बाल्य देखभाल गृह में सामान्यतया: बच्चों के छोटे समूह की सुविधाप्रदाता के घर पर देखभाल की जाती है, जबकि केन्द्र अघरेलु वातावरण में बच्चों के बड़े समूह को सेवा प्रदान करते हैं। रिश्तेदारों जैसे चाचा, चाची, चचेरे भाई-बहन आदि एवं गैर रिश्तेदारों द्वारा की जाने वाली देखभाल में अंतर होता है। गैर-रिश्तेदार देखभालकर्ता घर में, पडोस में अथवा मित्र हो सकते हैं जो बच्चे के घर पर आकर अथवा अपने घर पर बच्चे की देखभाल की सुविधा उपलब्ध कराते हैं। व्यवस्थित बाल्य देखभाल की श्रेणी में क्रेच, डे केयर केंद्र, प्री-स्कूल, बाल्य देखभाल केंद्र, नर्सरी स्कूल, किंडरगार्टन और प्री-प्राइमरी स्कूल सम्मिलित हैं। कभी-कभी नियोक्ता अपने कर्मचारियों के बच्चों की देखभाल हेतु कार्यस्थलों पर अथवा कार्यस्थलों के समीप डे-केयर की सुविधा भी उपलब्ध कराते हैं।

10.6 देखभालकर्ता (अभिभावक एवं शिक्षक) और बच्चे

अभिभावक, शिक्षक एवं बच्चे एक ऐसा गतिशील त्रय है, जिसमें घनिष्ट संवाद होना अति आवश्यक है। अभिभावकों और शिक्षकों को बच्चों के हितों को ध्यान में रखते हुए एक दल के रूप में कार्य करने की आवश्यकता है। अभिभावक एवं शिक्षक दोनों का ही उद्देश्य बच्चों के स्वास्थ्य एवं सुरक्षा को सुनिश्चित करने हेतु एक पोषक वातावरण निर्मित करना है। उन्हें, बच्चों में कौशलों और संसाधनों को विकसित करना चाहिए ताकि वे सफल व्यस्क बनकर अपने सांस्कृतिक मूल्यों को आगे बढ़ा सके। उनका उत्तरदायित्व, मुख्य विकासात्मक कार्यों, जोकि शारीरिक, संज्ञानात्मक, सामाजिक और संवेगात्मक विकास में सहायक हों, हेतु अवसर उपलब्ध कराना भी है। शुरूआती वर्षों के दौरान बच्चों की निम्नलिखित आवश्यकताएँ होती हैं–

- परिवार का निस्वार्थ प्रेम
- सुरक्षित एवं संरक्षित वातावरण
- सहयोगात्मक शिक्षक एवं देखभालकर्त्ता
- अन्य बच्चों के साथ खेलने के अवसर
- आत्म-विश्वास और उच्च आत्म-सम्मान
- उपयुक्त मार्ग-दर्शन एवं अनुशासन

ये सभी अभिभावकों और शिक्षकों के सतत् सहयोग द्वारा ही संभव है। इसकी चर्चा नीचे की गयी है।

10.6.1 अभिभावकों एवं शिक्षकों के बीच सहयोग

देखभाल केन्द्रों को बच्चों के समूहों को संभालना होता है, अत: उन्हें अभिभावकों से निरंतर संपर्क बनाये रखना चाहिए। अभिभावकों के साथ कार्यशाला के रूप में अथवा सामूहिक रूप से भेंट करना अधिक लाभप्रद होता है, क्योंकि इससे अभिभावकों को एक-दूसरे से

टिप्पणी

बाल्य देखभाल मान्यताओं, व्यवहारगत मुद्दों एवं बच्चों को अनुशासित करने के तरीकों को जानने का अवसर मिलता है। अभिभावकों एवं देखभालकर्ताओं की नियमित रूप से भेंट होनी चाहिए जिससे बच्चों की विकास दर की जानकारी मिल सके। अभिभावकों एवं शिक्षकों के द्वारा बच्चों में होने वाले परिवर्तनों तथा विकास में होने वाले विलंब पर भी चर्चा की जानी चाहिए। पिछले पाठों में आप विकास में विलंब की शुरुआती पहचान के विषय में पढ़ चुके हैं।

10.6.2 अभिभावक-शिक्षक संवाद के माध्यम

अभिभावक देखभाल केंद्रों के नियमित संपर्क में रह सकते हैं, इसके लिए वे विशेष मुद्दों पर चर्चा करने के लिए समय ले सकते हैं अथवा बच्चों को केंद्रों पर छोड़ते या लेते समय उनकी गतिविधियों और उनके प्रत्युत्तरों के बारे में बता सकते हैं। सुबह शाम नियमित संवाद होने से घर एवं केंद्र के मध्य सामंजस्य रहता है जिससे बच्चा स्वयं को अपरिचित अनुभव नहीं करता है। घर पर बच्चों की दिनचर्या एवं निश्चित प्रतिक्रियाओं को साझा करने से शिक्षकों को उनकी संवेगात्मक सुरक्षा हेतु संवाद तैयार करने में सहायता मिलती है। इसी प्रकार जब बच्चे अपने अभिभावकों से विद्यालय के बारे में बातें सुनते हैं तो उन्हें प्रसन्नता होती है और वे विद्यालय को, केवल एक ऐसा स्थान, जहाँ उन्हें प्रतिदिन भेजा जाता है, समझने की अपेक्षा परिवार की दिनचर्या का एक हिस्सा समझने लगते हैं। अभिभावक शिक्षक ई-मेल, सोशल नेटवर्किंग, मैसेजस् (SMS) और फोन आदि तकनीकी माध्यमों का प्रयोग करके भी एक दूसरे के सपर्क में रह सकते हैं। आप मॉड्यूल 4 में संचार के विषय में विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

10.6.3 बच्चे एवं देखभाल मान्यताओं के विषय में उनकी अवधारणाएँ

बच्चों के पास अभिव्यक्ति हेतु व्यापक शब्दकोष नहीं होता है, फिर भी वे अकारण रोकर अथवा चिड़चिड़ेपन द्वारा अपनी परेशानी और असुखद अनुभवों को व्यक्त कर देते हैं। वास्तव में, बच्चों द्वारा प्रदर्शित असामान्य क्रिया के प्रति शिक्षकों एवं अभिभावकों की संवेदनशील प्रतिक्रिया बच्चों का तनाव कम करने में सहायक होती है। आइए, इस बात को निम्नलिखित उदाहरण द्वारा समझते हैं–

''एक बच्चा जिसकी आयु 18 माह है, परंतु देखने में और क्षमताओं में वह केवल 8 माह का प्रतीत होता है। वह बच्चा हल्की सी आवाज अथवा शोर से डर कर कांप जाता था और किसी भी व्यस्क के पास जाने का प्रयास नहीं करता था। देखभालकर्ता ने देखा कि बच्चा दूध पिलाने के समय भी पूर्ण सहयोग नहीं देता था। प्यार से मनुहार करने पर बच्चे ने प्रत्युत्तर दिया। दिन समाप्त होने तक बच्चा देखभालकर्ता की गोद में चला गया और कुछ दिनों में उससे लगाव महसूस करने लगा। कुछ ही दिनों में वह आत्मविश्वासी बन गया और नियमित निर्देश पाकर वह सहयोगात्मक व्यवहार करने लगा। चार माह पश्चात वह बच्चा अपनी आयु के अनुसार नियमित क्रियाकलाप तथा गतिविधियाँ सफलतापूर्वक कर रहा था।''

यह उदाहरण तीन वर्ष से कम आयु के बच्चों की देखभाल के तीन सिद्धांतों की व्याख्या करता है। यह सिद्ध करता है कि शुरूआती जांच और निष्कर्ष बच्चों के विकास में सहायक हो सकते

हैं। केंद्र पर आने के समय बच्चा अपनी आयु के अनुसार व्यवहार नहीं कर रहा था। उसकी समस्या तथा बेचैनी पर ध्यान न दिये जाने के कारण वह तनाव महसूस कर रहा था। संवेदनशील कर्मचारीगण बच्चों की भलाई के लिए चमत्कारिक रूप से कार्य कर सकते हैं।

अन्य सामाजिक परिप्रेक्ष्य में भी बच्चे घर अथवा विद्यालयी वातावरण में संवेदनशील एवं प्रतिक्रियात्मक वयस्कों के हस्तक्षेप द्वारा लाभांवित हो सकते हैं। अभिभावकों एवं शिक्षकों को एक-दूसरे के विरोधी के रूप में नहीं बल्कि एक टीम के रूप में कार्य करने की आवश्यकता है। घर आने पर बच्चे बातें करने के लिए उत्सुक रहते हैं। उस समय पर अभिभावकों को बच्चों की बातों को सुनने एवं उनके अनुभवों की प्रकृति को समझने का प्रयास करना चाहिए। यदि दो या तीन वर्ष का बच्चा कहता है कि – ''मैंने स्कूल में कुछ नहीं किया'' अथवा ''मेरी बारी नहीं आयी'', अथवा ''अध्यापिका मुस्कराती नहीं है, मुझे ऐसी अध्यापिका चाहिए जो बच्चों को देखकर मुस्कराए'', तो वास्तव में बच्चा देखभाल केंद्र का आकलन कर रहा है, जिससे केंद्र का वातावरण एवं देखभालकर्ता का व्यवहार सम्मिलित है। बच्चे सक्रिय एवं सचेत होते हैं और अपने तरीकों से अर्थ निकालते हैं। वयस्कों को बच्चों द्वारा बताए गए इन अर्थों का संज्ञान लेकर प्रशंसा करनी चाहिए।

आपने क्या सीखा

- शुरूआती वर्षों में, विकास के प्रत्येक पक्ष में अद्‌भुत वृद्‌धि होती है। सकारात्मक विकासात्मक परिणाम लाने हेतु पोषक घरेलू वातावरण का होना आवश्यक है।
- सहयोगात्मक एवं उत्तरदायी वातावरण, उत्तरदायी संबंध एवं जीवन कौशल, तनाव के स्रोतों को कम करना, देखभाल के मूलभूत सिद्धांत हैं।
- बच्चों की वृद्‌धि, उत्तरजीविता और विकास को सुनिश्चित करने हेतु कुछ आधारभूत उपाय हैं।
- बच्चों के विकास को बढ़ावा देने हेतु संवेदी उद्‌दीपक की उपलब्धता आवश्यक है।
- बाल्य देखभाल की गुणवत्ता, बच्चों की अधिगम योग्यता, स्वस्थ संबंध बनाना और सर्वांगीण विकास को प्रभावित करती है।
- उच्च कोटि का ईसीसीई कार्यक्रम छोटे बच्चों के शारीरिक, सामाजिक, संवेगात्मक और संज्ञानात्मक विकास को प्रोत्साहित करने हेतु, एक सुरक्षित एवं पोषक वातावरण प्रदान कराता है।
- प्रारंभिक बाल्यावस्था के दौरान खेल एवं आनंददायक अंतर्क्रियाएं आवश्यक हैं।
- लयबद्ध एवं चरणबद्ध देखभाल बच्चों की अपेक्षाओं एवं आकाक्षाओं को शांत करती है।
- बाल्य देखभाल वातावरण मुख्य रूप से दो प्रकार का होता है– पारिवारिक एवं गैर-पारिवारिक।
- अभिभावक, शिक्षक और बच्चे, इनके मध्य घनिष्ठ संवाद होना आवश्यक है।

- अभिभावकों एवं शिक्षकों को बच्चों के हितों को ध्यान में रखकर, एक टीम के रूप में कार्य करना चाहिए। उन्हें बच्चों के लिए एक पोषक वातावरण निर्मित करने की आवश्यक है।

पाठांत प्रश्न

1. संवेदी उद्दीपन के महत्व की व्याख्या कीजिए।
2. तीन वर्ष से कम उम्र के बच्चों की देखभाल के सिद्धांतों पर चर्चा कीजिए।
3. प्रारंभिक तीन वर्षों के दौरान स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं आहार के महत्व का वर्णन कीजिए।
4. विभिन्न प्रकार की देखभाल प्रदत्ता प्रणालियों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।
5. बच्चों के सर्वांगीण विकास में अभिभावक एवं शिक्षक किस प्रकार योगदान दे सकते हैं?
6. देखभाल प्रदान करते समय लयबद्धता क्यों महत्वपूर्ण है?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

10.1

1. असत्य
2. सत्य
3. सत्य
4. सत्य
5. सत्य

10.2

(अ) 1. स्तनपान 2. विश्वास 3. तीव्र विकास 4. अर्द्ध-ठोस, दूध

(ब) (i) च (ii) द (iii) ब (iv) अ (v) स

10.3

1. लगाव, सकारात्मक
2. सुरक्षा, वातावरण
3. खोज, स्वतंत्र चिंतन, कल्पना, रचनात्मकता

टिप्पणी

4. सृजनात्मक, अभिप्रेरणा

5. उद्दीपक, विश्राम

संदर्भ

- Datta, V. (2007). Ensuring quality in child care. In V. Datta & R. M. Konantambigi (Eds.), *Day care for young children in India: Issues and prospects* (pp. 304-317). New Delhi: Concept.
- David, T. G., & Weinstein, C. S. (1987). The built environment and children's development. In T. G. David & C. S. Weinstein (Eds.), *Spaces for children: The built environment and child development* (pp. 3-18). New York: Plenum Press.
- García, Luis, J., Heckman, J. J., Leaf, D. E., & Prados, M. J. (2016). *The life-cycle benefits of an influential early childhood program*. Retrieved from https://heckmanequation.org/assets/2017/01/F_Heckman_CBAOnePager_120516.pdf
- Gupta, A. (2017). How neoliberal globalization is shaping early childhood education policies in India, China, Singapore, Sri Lanka and the Maldives. *Policy Futures in Education*, *16* (1), 11-28. doi:10.1177/1478210317715796.
- Harkness, S., Super, C. M., Mavridis, C. J., Barry, O., & Zeitlin, M. (2013). Culture and early childhood development: Implications for policy and program. In P. R. Britto, P. L. Engle, & C. M. Super (Eds.), *Handbook of early childhood development research and its impact on global policy* (pp. 142-160). Oxford: Oxford University Press.
- Isaac, R., Annie, L. K., & Prashanth, H. R. (2014). Parenting in India. In H. Selin (Ed.), *Parenting across cultures: Childrearing, motherhood and fatherhood in non-western cultures* (pp. 39- 44). New York: Springer.
- Kapur, M. (2003). Childcare in ancient India. In J. G. Young, P. Ferrari, S. Malhotra, S. Tyano, & E. Caffo (Eds.), *Brain culture and development* (pp. 95-104). New Delhi: Macmillan.
- Konantambigi, R. M. (2007). Developmental needs of young children: Home, day care and state linkages. In V. Datta & R. M. Konantambigi (Eds.), *Day care for young children in India: Issues and prospects* (pp. 31-57). New Delhi: Concept Pub. Co.

- National Scientific Council on the Developing Child. (2007). *The science of early childhood development: Closing the gap between what we know and what we do*. Retrieved from https://developingchild.harvard.edu/
- Paul, S. (2017). *Quality standards for early childhood services: Examples from South and South East Asia* (126). Retrieved from https://bernardvanleer.org/app/uploads/2017/06/ECM17_15_SEAsia_Sandipan.pdf
- Razavi, S. (2007). *The political and social economy of care in a development context: Conceptual issues, research in questions and policy options*. Geneva: UNRISD.
- Seymour, S. (2004). Multiple caretaking of infants and young children: An area in critical need of a feminist psychological anthropology. *Ethos*, *32*(4), 538-556. doi:10.1525/eth.2004.32.4.538
- Shonkoff, J. P., & Phillips, D. A. (Eds.). (2000). *From neurons to neighborhoods: The science of early childhood development*. Washington D.C: National Academy Press.
- Shonkoff, J. P., & Richter, L. (2013). The powerful reach of early childhood development: A science based foundation for sound investment. In P. R. Britto, P. L. Engle, & C. M. Super (Eds.), *Handbook of early childhood development research and its impact on global policy* (pp. 24-34). Oxford: Oxford University Press.
- Vandell, D. L., & Wolfe, B. (2000). *Child care quality: Does it matter and does it need to be improved?* (78) Madison: Institute for Research on Poverty.
- Yoshikawa, H., & Kabay, S. (2015). *The evidence base on early childhood care and education in global contexts*. New York: UNESCO.